समर्पण

विश्व के रहस्य, ज्ञानी खोले यहाँ;

न भूतो न भविष्यति, ऐसे ज्ञानी 'कहाँ'!

छः तत्त्वों के गुह्य मौलिक स्पष्टीकरण;

आप्तवाणी चौदहवीं है यह बेजोड़!

छः तत्त्वों की अनादि से भागीदारी;

नहीं कोई कह सकता है ज़्यादा, मेरा या तेरा!

गति, स्थिति सहायक, हेराफेरी;

आकाश कहे भाग में, जगह 'मेरी'!

काल की व्यवस्था, जड़ का माल;

चेतन निरीक्षक, पर किया धमाल!

बन बैठा मालिक, टूटी बाड़;

ज्ञानी लाते हैं ठिकाने पर, वही कमाल!

विश्रसा, प्रयोगसा, मिश्रसा;

समझाई सहज ही, परमाणु दशा!

क्रियावान शक्ति, मात्र *पुद्गल* की;

कल्पना करता है चेतन, *पुद्गली* चित्रण की!

तीर्थंकरी विज्ञान, प्रकट हुआ दादा के माध्यम से;

चौदहवीं आप्तवाणी, जगत् के चरणों में रखी!

डॉ. नीरू बहन अमीन

व्यवहारिक और आध्यात्मिक पूर्णज्ञान से भरी आप्तवाणी

(Pg-7) ज्ञानी पुरुष अर्थात् इस वर्ल्ड की कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो उन्हें जानने की बाकी हो। ज्ञानी वर्ल्ड की ओब्ज़र्वेटरी कहलाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप जो भी जानते हैं, क्या वह सब बता नहीं देना चाहिए?

दादाश्री : यह बता ही रहे है न! ये आप्तवाणियाँ लिखी जाएँगी, वह इसलिए है कि इन लोगों को ये जो पहले की परिभाषा वाले शब्द हैं न, उनमें से एक भी लोगों को समझ में नहीं आता। इसलिए यह जो है, अपनी भाषा में, ग्रामीण भाषा में सभी को दिया है न, तो सभी समझ जाएँगे, कि धर्म क्या है और आत्मा क्या?

प्रश्नकर्ता : आप जो 356 डिग्री पर बैठे हैं, उस डिग्री का ज्ञान सभी को दे देना चाहिए न?

दादाश्री : हाँ। तो यह जो आप्तवाणी (पुस्तक) है न, वैसी 14 आप्तवाणियाँ तैयार होंगी। जब 14 आप्तवाणियाँ तैयार हो जाएँगी, तो उन सब में जो कुछ भी संकलित किया जाएगा, तब उनमें पूरा ज्ञान आ जाएगा। मोती तो पूरे आ जाने चाहिए न?

यह चार अंश की कमी वाला केवलज्ञान है। अतः ये शास्त्र ही कहे जाएँगे। अन्य शास्त्रों में तो सूझ भी नहीं पड़ती।

प्रश्नकर्ता : वे जो छः दर्शन हैं न, वैसे ही यह आप्तवाणी भी एक दर्शन नहीं कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं, आप्तवाणी तो छः दर्शनों का सम्मिलित स्वरूप है। छः दर्शन हर एक के खुद के अलग-अलग हैं। कोई कहता है, 'हमारा यह, हमारा यह, हमारा यह।' यह सम्मिलित दर्शन है। यह अनेकांत है, एकांतिक नहीं है। अर्थात् यह छः दर्शनों का

सम्मिलित स्वरूप है। यदि छः दर्शन वाले मिलकर यहाँ पर बैठें, तो कोई भी उठकर नहीं जाएगा। सभी को खुद के दर्शन जैसा ही लगेगा। अतः यह पक्षपाती नहीं है, निष्पक्षपाती है! यहाँ पर जैन बैठ सकता है, वेदान्ती बैठ सकता है और यहाँ पर पारसी भी हैं, सभी रहते हैं यहाँ पर।

(Pg-8) प्रश्नकर्ता : कोई दादा की वाणी पर श्रद्धा रखे, आप्तवाणी पर श्रद्धा रखे तो समकित हो जाएगा या नहीं हो जाएगा?

दादाश्री : आपको किस प्रकार से श्रद्धा आ गई?

प्रश्नकर्ता : आप्तवाणी पढ़कर श्रद्धा आ गई।

दादाश्री : उसी को समकित कहते हैं। यह दृष्टि में फिट हो जाए तो उसी को आत्म दृष्टि कहा जाता है। इस दृष्टि में (आप्तवाणी में समझाई गई दृष्टि) अपनी दृष्टि पूरी तरह से फिट हो जाए तो आत्मदृष्टि हो जाएगी। जो अन्य दृष्टि है, वह 'यह नहीं है, यह नहीं है, यह, यह, यह नहीं है, यह, यह', इस प्रकार से दोनों अलग-अलग हैं, ऐसा पता चलता है। लेकिन फिर यदि अन्य कोई पुस्तक नहीं पढ़ेगा तो निबेड़ा आएगा।

ये सभी आप्तवाणियाँ तो हेल्पिंग हैं। बाद में आने वाले लोगों को जरूरत पड़ेगी न? उनके लिए हेल्पिंग है। ये आप्तवाणियाँ तो बहुत आश्चर्यजनक चीज़ हैं। और आप्तवाणियों से संसार व्यवहार की परेशानी भी सारी चली जाएगी।

कितने ही लोग मुझसे ऐसा कहते हैं कि जब बहुत परेशानी में फँस जाता हूँ और जरा आप्तवाणी लेकर ऐसे देखता हूँ तो वही पन्ना निकलता है और मेरी परेशानियों को खत्म कर देता है। इसे लिंक मिल जाती है।

प्रश्नकर्ता : संकलन बहुत अच्छा हुआ है। एक-एक सबजेक्ट बहुत अच्छी तरह संकलित हुआ है।

दादाश्री : हाँ। मेरी ऐसी इच्छा है, इसलिए अच्छा होता है। अत: थोड़ा-थोड़ा समय निकालकर पढ़ते रहना ज़रा।

प्रश्नकर्ता : इसलिए दादा, हम कहते हैं कि आप्तवाणियों का हम पर बहुत उपकार है।

दादाश्री : आप्तवाणी तो अपना खुद का ही जीता जागता स्वरूप है न, एक प्रकार का!

इसलिए यदि इस वाणी को सिर्फ पढ़े न तब भी यों ही समकित हो जाए!

संपादकीय

(Pg-9) प्रस्तुत ग्रंथ आप्तवाणी श्रेणी -14 (भाग-2) में अविनाशी तत्त्वों का वर्णन है। पूज्यश्री ने यहाँ पर खंड-1 में छः अविनाशी तत्त्वों की अति-अति गूह्य और सूक्ष्मतम बातें सामान्य मनुष्य को भी सादी और सरल, तलपदी भाषा में समझा दी है। उसमें भी छः तत्त्वों की साझेदारी का उदाहरण देकर ब्रह्मांड की रचना का गुह्यतम ज्ञान बिलकुल सरल कर दिया है!

जड़ तत्त्वों का माल-सामान, गति-सहायक तत्त्व की हेराफेरी (कार्टींग)का काम, स्थिति सहायक तत्त्व माल को जमा कर रख देता है, स्टोर करता है। काल तत्त्व नए को पुराना करके मैनेजमेन्ट का काम करता है। आकाश तत्त्व व्यापार करने के लिए माल रखने की जगह देता है। और चेतन तत्त्व का कार्य है सुपरवाइजर का। लेकिन उसके बजाय वह मालिक बन बैठा है, उससे साझेदारी में झंझट हो गई और दावे दायर हुए। चेतन यदि वापस निरीक्षक (ज्ञाता-द्रष्टा) बन जाए तो निबेड़ा आ जाएगा, इस अनादि की कॉन्फ्लिक्ट (उलझन-झगड़ों) का।

जड़ *पुद्गल* परमाणु और *पुद्गल* के रहस्य को खंड-2 में बताए गए हैं। उनमें भी विश्रसा, प्रयोगसा और मिश्रसा के सादा उदाहरण देकर सरलता से समझा दिया है। *पुद्गल* की करामात और उसका प्रसवधर्मी स्वभाव, यह पढ़ते ही दिमाग़ में उतर जाता है कि पूरा जगत् *पूरण-गलन* है। *पुद्गल* की क्रियावान शक्ति का रहस्य समझ में आने पर व्यवहारिकता से लेकर तात्त्विकता तक की कर्ता से संबंधित भ्रांति खत्म हो जाती है।

स्थूल व्यवहार तक होने वाले परमाणुओं के असर के बारे में यहाँ पर बताया गया है। ज्ञानी की दृष्टि से भोजन के परमाणुओं के असर का भी रहस्य पता चलता है।

प्रस्तुत ग्रंथ पढ़ने से पहले साधक को उपोद्घात अवश्य ही पढ़ना चाहिए, तभी ज्ञानी के अंतर आशय को स्पष्ट रूप से समझ सकेंगे और लिंक अगोपित होगी।

आत्मज्ञान के बाद बीस साल तक अलग-अलग व्यक्तियों के लिए परम पूज्य दादाश्री की वाणी टुकड़ों-टुकड़ों में निकली है। इतने सालों में पूरा सिद्धांत एक साथ एक ही व्यक्ति के संग तो नहीं निकल सकता न?! **(Pg-10)** बहुत सारे सत्संगों को इकट्ठा करके, संकलित करके सिद्धांत रखा गया है। साधक एक चेप्टर को एक ही बार में पढ़ लेंगे तभी लिंक रहेगी और समझ में सेट होगा। टुकड़े-टुकड़े करके पढ़ने से लिंक टूट जाएगी और समझ सेट करने में मुश्किल होने की संभावना रहेगी।

ज्ञानी पुरुष की ज्ञानवाणी मूल आत्मा को स्पर्श करके निकली है, जो अमूल्य रत्नों के समान है। तरह-तरह के रत्न इकट्ठे होने पर एक-एक सिद्धांत की माला बन जाती है। हम तो, हर एक बात को समझ-समझकर दादाश्री के दर्शन में जैसा दिखाई दिया, वैसा ही दिखाई दे, ऐसी भावना के साथ पढ़ते जाएँगे और रत्नों को संभालकर इकट्ठे करते रहेंगे तो अंतत: सिद्धांत की माला बन जाएगी। वह सिद्धांत हमेशा के लिए हृदयगत होकर अनुभव में आ जाएगा।

14वीं आप्तवाणी पी.एच.डी. लेवल की है। जो तत्त्वज्ञान को स्पष्टत: समझा देती है! इसलिए यहाँ पर बेसिक बातें विस्तारपूर्वक नहीं मिलेंगी या फिर बिल्कुल भी नहीं मिलेंगी। साधक अगर तेरह आप्तवाणियों की और दादाश्री के सभी महान ग्रंथों की फुल स्टडी करके और समझने के बाद चौदहवीं आप्तवाणी पढ़ेगा तभी समझ में आएगा। अत: नम्र विनती है कि यह सब समझने के बाद ही आप चौदहवीं आप्तवाणी की स्टडी करना।

हर एक नया हेडिंग वाला मेटर नए व्यक्ति के साथ हुआ वार्तालाप है, ऐसा समझना। इस कारण से ऐसा लगेगा कि वही प्रश्न फिर से पूछ रहे हैं लेकिन गहन विवरण मिलने के कारण संकलन में उसका समावेश किया गया है।

एनाटॉमी (शरीर विज्ञान) में दसवीं, बारहवीं कक्षा में, मेडिकल में वर्णन है। वही बेसिक बात आगे जाकर गहराई में समझाई जाती है तो उस कारण से ऐसा नहीं कह सकते कि सभी कक्षाओं में वही पढ़ाई है।

ज्ञानी की वाणी तमाम शास्त्रों के सार रूपी है और जब वह वाणी संकलित होती है तब वह स्वयं शास्त्र बन जाती है। उसी प्रकार यह आप्तवाणी मोक्षमार्गी के लिए आत्मानुभवी के कथन के वचनों का शास्त्र है, जो मोक्षार्थियों को मोक्षमार्ग पर आंतरिक दशा की स्थिति के लिए माइल स्टोन की तरह काम में आएँगे।

शास्त्रों में सौ मन सूत में एक बाल जितना सोना बुना हुआ होता है, **(Pg-11)** जिसे साधक को स्वयं ही ढूँढकर प्राप्त करना होता है। आप्तवाणी में तो प्रकट ज्ञानी ने सौ प्रतिशत शुद्ध सोना ही दे दिया है।

गुह्यतम तत्त्व को समझने के लिए यहाँ पर संकलन में परम पूज्य दादाश्री की वाणी में निकले हुए अलग-अलग उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। अनुभवगम्य अविनाशी तत्त्व को समझने के लिए विनाशी उदाहरण हमेशा मर्यादित ही रहेंगे। फिर भी अलग-अलग एंगल से समझने के लिए तथा अलग-अलग गुण को समझने के लिए अलग-अलग उदाहरण बहुत ही उपयोगी हो जाते हैं। कहीं पर विरोधाभास जैसा लगता है लेकिन वह तुलनात्मक है, इसलिए अविरोधाभासी है। वह सिद्धांत का कभी भी छेदन नहीं करता।

परम पूज्य दादाश्री की बातें अज्ञान से लेकर केवलज्ञान तक की हैं। प्रस्तावना या उपोद्घात में संपादकीय क्षति हो सकती है। आज जितना समझ में आया, उसी अनुसार आज यह बताया गया है लेकिन ज्ञानी की कृपा से आगे जाकर विशेष ज्ञान निरावृत हो जाए तो वही बात अलग प्रतीत होगी। लेकिन वास्तव में तो वह आगे का विवरण है। यथार्थ ज्ञान की समझ तो केवलीगम्य ही हो सकती है! इसलिए यदि कोई भूलचूक लगे तो क्षमा माँगते हैं। ज्ञानी पुरुष की ज्ञानवाणी को पढ़-पढ़कर अपने आप ही मूल बात को समझ में आने दो। ज्ञानी पुरुष की वाणी स्वयं क्रियाकारी है, अवश्य ही स्वयं उग निकलेगी।

खुद की समझ पर फुल पोइन्ट (स्टॉप) लगाने जैसा नहीं है। हमेशा कॉमा लगाकर ही आगे बढ़ेंगे। ज्ञानी की वाणी की नित्य आराधना होती रहेगी तो नई-नई स्पष्टता होगी और समझ वर्धमान होने के बाद ज्ञानदशा की श्रेणियाँ चढ़ने के लिए विज्ञान का स्पष्ट अनुभव होता जाएगा।

अति-अति सूक्ष्म बातें, विभाव या पर्याय जैसी, पढ़ते हुए यदि साधक को उलझन में डाल दें तो उससे परेशान होने की ज़रूरत नहीं है। अगर यह समझ में नहीं आया तो क्या मोक्ष रुक जाएगा? बिल्कुल भी नहीं। मोक्ष तो ज्ञानी की पाँच आज्ञा में रहने से ही सहज प्राप्य है, तार्किक अर्थ और पंडिताई से नहीं। आज्ञा में रहने पर ज्ञानी की कृपा ही सर्व क्षतियों से मुक्त करवा देती है। अत: सर्व तत्त्वों का सार, ऐसे मोक्ष के लिए तो ज्ञानी की आज्ञा में रहा जाए, वही सार है।

- डॉ. नीरू बहन अमीन

आप्तवाणी

श्रेणी-14 भाग-2

खंड - 1

छः अविनाशी तत्त्व

[1]

अविनाशी तत्त्वों से रचा गया विश्व

उत्पत्ति हुई, विज्ञान से

प्रश्नकर्ता : **(Pg-1)** जीवात्मक, *पुद्गल* परमाणु वगैरह छः द्रव्यों का परिचय तत्त्वखंड दर्शन में देकर, उसके संयोग तथा विभाग, सृष्टि की असीम आकृतितता, अनादि अनंत का प्रतिपादन करती है। उन संयोगों और विभाग की बात समझाइए।

दादाश्री : तत्त्वखंड दर्शन में क्या बताते हैं कि ये छः द्रव्य निरंतर परिवर्तनशील हैं। अतः यह जगत् बन गया है, संयोग वियोग से। सृष्टि की असीम आकृतितता है, अतः उसे कोई बनाने वाला नहीं होना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : यह जो संयोग शब्द का उपयोग किया है और वियोग नहीं रखा, विभाग शब्द रखा है। विभाग शब्द ज़रा समझाइए। संयोगों को आपने साइन्टिफिक सरकमस्टेशियल एविडेन्स कहा है लेकिन विभाग?

दादाश्री : *निर्जरा* (आत्मप्रदेश में से कर्मों का अलग होना) हुई, वह सारा विभाग है। जो विभाज्य हो जाता है, **(Pg-2)** वह

सृष्टि की असीम आकृतितता है अर्थात् विभाग करने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है। संयोग करने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है, अपने आप ही होता रहता है यह। इससे अनादि अनंत भी प्रभावित हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : 'समग्र सृष्टि विज्ञान पर निर्भर है', आप यदि ऐसा कहते हैं तो विज्ञान को रचने वाला कौन है?

दादाश्री : विज्ञान को रचने वाला कोई नहीं होता। विज्ञान अर्थात् इन छः तत्त्वों से यह जगत् की रचना हो गई है।

प्रश्नकर्ता : समग्र सृष्टि के एक-एक अणु में वैज्ञानिक गुणधर्म समाए हुए हैं तो हर एक अणु में पक्के हिसाब वाले गुणधर्म किसने रखे हैं?

दादाश्री : उसे रखने वाला कोई नहीं है, स्वाभाविक है। रखने वाला कोई होता, तब तो यदि कोई मूर्ख खड़ा हो जाता तो वह हम सब को मोक्ष में जाने ही नहीं देता।

अतः किसी ने किया ही नहीं है। है, है और है। था, था और था और रहेगा, रहेगा व रहेगा ही। यह अनादि है और अनंत है। अतः है, है और है। क्योंकि यदि सनातन वस्तु के लिए हम ऐसा कहें कि, 'हुआ था', तो वहाँ अपनी भूल है। विनाशी वस्तु के लिए कहा जा सकता है कि, 'यह हुआ था'।

देयर आर सिक्स परमानेन्ट्स, उस परमानेन्ट को तो होना या नहीं होना है ही नहीं। होना या नहीं होना, यह किसकी खोज है? तो जो अपने आपको विनाशी मानता है, वह विनाशी तत्त्वों को देखता रहता है। जो अविनाशी है, वह अविनाशी को देखता रहता है। ऐसी दोनों ही प्रकार की दृष्टि है।

प्रश्नकर्ता : एक चीज़ का पता नहीं चला। आपने कहा, 'जगत् काल से अनादि है', परंतु उसके उत्पत्ति का मूल कारण कुछ तो होना चाहिए?

दादाश्री : (Pg-3) ये सब वैज्ञानिक प्रकार से हो गया है। वास्तव में इस जगत् में क्या है, यह जानना चाहिए? वास्तव में इस जगत् में छः तत्त्व हैं, ये अविनाशी तत्त्व हैं और आँखों से यह जो सारा रूपी दिखाई देता है, वे उनकी अवस्थाएँ दिखाई देती हैं। तत्त्व अविनाशी होते हैं और तत्त्व की अवस्था सिर्फ विनाशी होती है। यह सब समझ में नहीं आता, इसलिए फिर लोगों ने डाल दिया कि इसका क्रिएटर भगवान है। क्रिएटर वाली बात छोटे बच्चों के लिए है, न कि समझदार लोगों के लिए। वास्तव में कोई क्रिएटर नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो क्या ऐसा है कि कुदरत ने सृष्टि रची है?

दादाश्री : कुदरत ने नहीं रची है। कुदरती प्रकार से हो गई है। यह जगत् किस प्रकार से बना है, वह सब हमें हमारे ज्ञान में दिखाई देता है।

अतः भगवान ने नहीं बनाई है यह दुनिया। यह दुनिया भगवान ने बनाई होती तो भगवान का धंधा क्या होता? बनाने के बाद में क्या करेगा? बैठा रहेगा?

प्रश्नकर्ता : भगवान ने नहीं बनाई और भगवान के बिना बन भी नहीं सकती।

दादाश्री : वह तो नैमित्तिक बात है। खुद के हक़ से नहीं बनी है। निमित्त भाव से ये सब कर्ता हैं। स्वतंत्र भाव से कोई कर्ता नहीं है। यह दुनिया किसी ने नहीं बनाई है और बनाए बिना बनी नहीं है इसका अर्थात् इतना ही है कि निमित्त भाव से है। और निमित्त कर्ता नहीं होता है, इसलिए इसका कोई कर्ता नहीं है।

प्रश्नकर्ता : कर्ता और अकर्ता दोनों नहीं हैं और दोनों हैं ही?

दादाश्री : हाँ सापेक्ष भाव है। अत: किसी अपेक्षा से वह कर्ता भी है और ज्ञान अपेक्षा से कर्ता नहीं है।

यह जगत् छ: इटर्नल तत्त्वों से बना है। और वास्तव में तो बना नहीं है, हमेशा से है ही, अनादि अनंत है ही। सातवाँ कोई इटर्नल है **(Pg-4)** नहीं इस जगत् में। जीवमात्र इन छ: तत्त्वों का सम्मिलित स्वरूप है। जितने भी जीव होते हैं, उनमें ये छ: वस्तुएँ हैं ही।

इस जगत् में छ: तत्त्व हैं, वे वस्तु के रूप में रहे हुए हैं। वे खुद के वस्तुत्व के संपूर्ण स्वभाव में रहते हैं। इन छ: वस्तुओं के सम्मेलन से यह पूरा जगत् बन गया है। इस जगत् को बुद्धि वाला कहाँ से समझ सकेगा?

नहीं पहुँच सकती वहाँ बुद्धि

तत्त्व इन्द्रियगम्य नहीं होते, तत्त्व ज्ञानगम्य होते हैं। अत: बाकी, यह सब जो दिखाई देता है, वे अवस्थाएँ हैं और अवस्थाएँ विनाशी होती हैं। अर्थात् 'हम' विनाशी को ही देखते आए हैं और विनाशी का ही अनुभव लेकर आए हैं। अत: हमें खुद को यह सब विनाशी ही लगता है।

प्रश्नकर्ता : उसके पीछे कोई समझ तो मिलनी चाहिए न, कि यह किस तरह से हुआ? शाश्वत का मतलब क्या है?

दादाश्री : सनातन।

प्रश्नकर्ता : दादाजी, आपने उदाहरण दिया था कि इस सर्कल में बिगिनिंग क्या और एन्ड क्या? उपमा देने से प्रश्न का निबेड़ा नहीं आता।

दादाश्री : नहीं आता, वह बात सही है परंतु वास्तव में यह जो जगत् है, वह तत्त्वों से है। मनुष्य जो देख सकता है, वह सिर्फ अवस्था को ही देख सकता है, तत्त्व को नहीं देख सकता। अत: अवस्था में रहकर तत्त्व की बात करता है तो वह बात उस तक पहुँच नहीं सकती। वह तो, जब तत्त्वों में बैठकर तत्त्व की बात की जाए तभी पहुँच सकती है। अत: 'खुद' इटर्नल होकर इटर्नल की बात करे तो पहुँच सकती है।

प्रश्नकर्ता : आपने अभी तक उन छ: तत्त्वों के बारे में नहीं बताया?

दादाश्री : हाँ, मैं बता रहा हूँ। चेतन (आत्मा), जड़ (*पुद्गल* परमाणु के रूप में) गतिसहायक, स्थितिसहायक, काल, आकाश। बस, ये **(Pg-5)** छ: अविनाशी तत्त्व हैं इस जगत् में। जब साइन्टिस्ट थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी को पार कर लेंगे तभी यह बात समझ में आएगी। रिलेटिविटी की थ्योरी को पूरा पार करने के बाद वहाँ पर बिगिनिंग ऑफ रियलिटी (रियलिटी की शुरुआत) होती है।

प्रश्नकर्ता : वह थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी क्या है?

दादाश्री : तीन ही थ्योरी जाननी हैं लेकिन आगे फिर वहाँ पर उसके लिए वाणी ही नहीं है। मैं समझा ज़रूर सकता हूँ परंतु आप जब मूल वस्तु को जान लोगे तभी वह समझ में आएगी। अत: वहाँ पर ये छ: तत्त्व रहे हुए हैं। छ: तत्त्व और यह (जगत्) यों किस तरह से चल रहा है और भगवान क्या कर रहे हैं, तब यह सब जान पाओगे।

इस थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी को पार करने के बाद रिलेटिव क्रॉस (खत्म) हो जाएगा और रियल की शुरुआत होगी। यह तो अभी तक थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी में घूम रहा है। उससे आगे गया ही नहीं है। अत: सिर्फ इतना ही समझने की ज़रूरत है। और आपको यदि आत्मा अन्वेल (unveil-अनावृत) करना हो तो एक बार आप आकर समझ लो, फिर आप भी वह बन पाओगे।

देयर आर थ्री थ्योरीज़, थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी, थ्योरी ऑफ रियलिटी एन्ड दी एब्सल्यूटिज़म थ्योरी। तो एब्सल्यूट में रहकर बात कर रहे हैं, यह रियलिटी की!

प्रश्नकर्ता : मैंने खुद ने जो पढ़ा है और जो जानता हूँ, वही मैं अपने विद्यार्थियों को पढ़ाता हूँ। लेकिन मेरी समझ में जो है, वह विद्यार्थियों की समझ में आ जाए, उसके लिए मुझे पहले उनके लेवल पर जाना पड़ता है। और फिर धीरे-धीरे उन्हें ऊपर लाना पड़ता है।

दादाश्री : यस-यस। राइट।

प्रश्नकर्ता : तब फिर वे मेरे स्तर पर आ सकते हैं या मुझसे भी ऊपर पहुँच सकते हैं। तो उसी तरह से क्या आप नीचे आकर हमें ऊपर नहीं ले जा सकते?

दादाश्री : (Pg-6) वहाँ (रियलिटी में) भाषा नहीं है। रियलिटी में भाषा से आपको समझ में ज़रूर आ सकता है लेकिन वह आपको एब्सल्यूट नहीं बता सकता। अभी तक मैंने आपके साथ ये सारी बातें नीचे उतर कर ही की हैं।

प्रश्नकर्ता : रिलेटिव के बारे में कुछ ऐसा बताइए न। जिससे रुचि जागे?

दादाश्री : बाइ रियली स्पीकिंग, देयर आर सिक्स इटर्नल एलिमेन्ट्स इन दिस वर्ल्ड। बाइ रिलेटिवली स्पीकिंग, देयर आर ओन्ली फेज़िज़, नो इटर्नल एलिमेन्ट।

प्रश्नकर्ता : तो रिलेटिव के बारे में फिर से बताइए? रिलेटिव में, क्या कहा आपने? रिलेटिव में फेज़िज़ हैं?

दादाश्री : रिलेटिव में फेज़िज़ हैं और रियल में इटर्नल है। देयर आर सिक्स इटर्नल एलिमेन्ट्स। यह है वर्ल्ड की ओरिजिनालिटी। वर्ल्ड के ओरिजिन में क्या है? तो यह है। इससे आगे कुछ भी नहीं है।

रियल और रिलेटिव

जो सनातन है, उसी को रियल कहा जाता है। और उनके मिलने पर मिक्स्चर रूपी जो कुछ बनता है, वह रिलेटिव है।

प्रश्नकर्ता : रियल और रिलेटिव क्या है? वे दोनों क्या हैं और उन दोनों में क्या संबंध है? लिंक क्या है?

दादाश्री : रियल पमारनेन्ट वस्तु है। अब छः में से शुद्ध चेतन परमानेन्ट है और बाकी के पाँच जो परमानेन्ट तत्त्व हैं, उनमें चेतन भाव नहीं है। अनंत प्रकार के अन्य गुणधर्म हैं। उन सभी के गुणधर्मों को लेकर ही यह रिलेटिव भाव उत्पन्न हुआ है। आत्मा तो निरंतर आत्मा ही रहता है। गधे में, कुत्ते में, हर एक में आत्मा चेतन के रूप में ही रहता है निरंतर। क्षण भर के लिए भी बदला नहीं है सिर्फ बिलीफ रोंग हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : (Pg-7) क्या रियलिटी, रियल का अविर्भाव है यह?

दादाश्री : हाँ, वह आविर्भाव ही है। अन्य कुछ है ही नहीं।

वास्तव में दिखाई देता है परमानेन्टपन

प्रश्नकर्ता : वास्तव में जो दिखाई देता है, उसमें क्या दिखाई देता है?

दादाश्री : परमानेन्टपन। इस जगत् रिलेटिव टेम्परेरीपन बताता है।

प्रश्नकर्ता : यह सब टेम्परेरी दिखाई देता है।

दादाश्री : अब, पमारनेन्ट दिखाई नहीं देता। ज्ञानी पुरुष जब ज्ञान देते हैं तब उसकी खुद की दृष्टि परमानेन्ट को देख पाती है, सभी चीज़ें। अब, परमानेन्ट एकदम से नहीं देखा जा सकता परंतु 'खुद' परमानेन्ट होने के बाद धीरे-धीरे फिर परमानेन्ट दिखाई देने लगता है।

तो अंत में यह परमानेन्ट है कितना? अंत में ये जो छः तत्त्व हैं, वही दिखाई देते हैं। आपको (ये ज्ञान लेने के बाद में) अभी सिर्फ चेतन ही दिखाई देता है। *पुद्गल* परमाणु कब दिखाई देंगे? केवलज्ञान होने पर। परंतु यह मार्ग मूल अविनाशी तत्त्वों को देखने का है।

थ्योरी ऑफ रियलिटी तत्त्व को स्पर्श करती है। कोई भी संत-महंत तत्त्व से यह नहीं समझ पाते कि भगवान क्या है। वे अपने विचार और कल्पना से ही समझते हैं।

नहीं है कोई कन्ट्रोलर उनका

प्रश्नकर्ता : आपने ये जो तत्त्व बताए हैं, उन पर किसी का कोई कन्ट्रोल है क्या?

दादाश्री : इस जगत् पर किसी का कन्ट्रोल है ही नहीं। सभी स्वतंत्र है, आत्मा इससे बिल्कुल अलग ही है।

प्रश्नकर्ता : यदि छः तत्त्व स्वतंत्र प्रकार से अलग-अलग, **(Pg-8)** भिन्न-भिन्न हैं तो अंदर ही अंदर उनकी अन्तर्क्रिया किस प्रकार से होती है?

दादाश्री : हाँ, वही देखने की ज़रूरत है।

इस वर्ल्ड का कोई मालिक नहीं, चलाने वाला नहीं है फिर भी इसकी नियती है। सूत्रधार व्यवस्थित शक्ति है, फिर वह भी जड़ शक्ति है।

प्रश्नकर्ता : यह शक्ति जड़ है, ऐसा किसने जाना?

दादाश्री : जो खुद ही आत्मा बनता है, ज्ञाता-द्रष्टा बनता है, उसने। आत्मा खुद ही सब जानता है। जड़ में अपार शक्ति है।

प्रश्नकर्ता : प्रथम, चेतन है या जड़?

दादाश्री : प्रथम और अंतिम नहीं है। सभी साथ में मिलकर सामुच्चय (संयुक्त) होते हैं।

प्रथम और अंतिम की खोज करने जाओगे तो अनंत जन्मों तक घूमना पड़ेगा। मोक्ष में नहीं जा पाओगे। साँप को भी बिल में जाते समय सीधा होना पड़ता है।

इन तत्त्वों को कन्ट्रोल करने की ज़रूरत ही नहीं रहती। ये छः तत्त्व इटसेल्फ खुद अपने आप ही घूम रहे हैं। संसार अर्थात् समसरण। समसरण अर्थात् वस्तुएँ निरंतर परिवर्तित होती रहती है, स्वाभाविक रूप से। किसी को करने की ज़रूरत नहीं है। यदि कोई इसे चलाने वाला होता न, तो अपना दम निकाल देता! इसका कोई *ऊपरी* (बॉस, वरिष्ठ मालिक) है ही नहीं, इसका कोई मालिक ही नहीं है, इसका कोई बनाने वाला ही नहीं है। यह पूरा ही जगत् विज्ञान से बना है और मैं यह खुद देखकर बता रहा हूँ मैं खुद इसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ कि कोई बनाने वाला नहीं है।

हर एक तत्त्व पूर्णतः स्वतंत्र

प्रश्नकर्ता : ये जो छः तत्त्व हैं, उनमें आत्मा के अलावा जो पाँच तत्त्व हैं, क्या उनका स्वतंत्र अस्तित्त्व है?

दादाश्री : (Pg-9) हाँ, जितना स्वतंत्र अस्तित्त्व आत्मा का है उतना ही पाँच तत्त्वों का हैं। सभी तत्त्व पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

प्रश्नकर्ता : आत्मा के संदर्भ में स्वतंत्र हैं या स्वतंत्र ही हैं बाकी के पाँच तत्त्व।

दादाश्री : वे सभी स्वतंत्र हैं, बिल्कुल स्वतंत्र हैं। किसी का किसी से लेना भी नहीं और देना भी नहीं है। और अभी भी स्वतंत्र है। उन्हें कोई लेना-देना नहीं। आत्मा किसी के ताबे में नहीं है। कोई भी आत्मा के ताबे में नहीं है।

प्रश्नकर्ता : परंतु आत्मा अक्रिय है तो क्या आत्मा कुछ भी नहीं करता?

दादाश्री : हाँ, आत्मा बिल्कुल अक्रिय है।

प्रश्नकर्ता : कुछ भी नहीं किया है तो उसका *पुद्गल* से संयोग कैसे हो गया?

दादाश्री : *पुद्गल* में ही खेलता है यह। ये सभी छः तत्त्व साथ में ही हैं परंतु कोई भी तत्त्व एक-दूसरे में प्रवेश नहीं करता, अलग ही हैं। कोई तत्त्व किसी तत्त्व पर असर नहीं डाल सकता।

इनमें भेद सिर्फ इतना ही है कि बाकी पाँचों ही तत्त्वों में चेतन भाव नहीं है जबकि आत्मा में चेतन भाव है। सिर्फ आत्मा को ही इनाम मिल सकता। और फिर हर एक का विशेष गुणधर्म है जो कि दूसरे में नहीं है। जो दूसरों में नहीं है, ऐसा विशेष चेतन गुणधर्म इस आत्मा में है। *पुद्गल* परमाणुओं में अलग प्रकार का विशेष गुण है। *पुद्गल* परमाणुओं में रूपी गुण है जो कि अन्य पाँचों में नहीं हैं। अतः हर एक में फिर विशेष गुण होता है।

पूरा जगत् तत्त्वों से भरा हुआ है। सिर्फ आत्मा ही चेतन तत्त्व है, वही परमात्मा है। और बाकी के तत्त्व जड़ हैं, वे चेतन नहीं हैं। अचेतन भाव वाले हैं परंतु बहुत ही तरह-तरह के गुणधर्मों वाले हैं।

यदि जगत् में अन्य तत्त्व नहीं होता तो आत्मा भी नहीं होता। ये सारे **(Pg-10)** तत्त्व अविनाभावि (एक-दूसरे के बिना रह नहीं सकते वैसा भाव) हैं।

दादा हैं वर्ल्ड की ऑब्ज़र्वेटरी

दिस इज़ द वर्ल्डस् ऑब्ज़र्वेटरी। चार वेद के *ऊपरी* हैं ये दादा। अतः आपके मन के सभी खुलासे हो जाने चाहिए। तभी समझ में आएगा और तभी निबेड़ा आएगा। नहीं तो, यह गप्प तो हज़ार सालों

से गाते आ रहे हैं, कुछ नहीं होगा। अत: जब तक आपको समझ में न आए तब तक पूछो। यहाँ पूछने जैसा है।

आपको ये सारी बातें पसंद हैं? साइन्स है यह तो। पूरे वर्ल्ड में किसी भी जगह यह साइन्स नहीं निकला है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! पहली बार ही लोगों के बीच आया है।

एक तत्त्व का ज्ञाता ज्ञानी कहलाता है। जिसने सिर्फ आत्मा को ही जान लिया, वह तत्त्व ज्ञानी कहलाता है। जिसने सभी तत्त्वों को जान लिया, जो यह भी जानता है कि हर अलग-अलग तत्त्व क्या कर रहा है, वह सर्वज्ञ कहलाता है।

आत्मा जानने का फल है मोक्ष। अनंत पीड़ा में भी मोक्ष है। जिसने आत्मा जाना, वह सर्व तत्त्वों का ज्ञाता-द्रष्टा बन जाता है।

छ: के मिश्रण से बना संसार

प्रश्नकर्ता : इस ब्रह्मांड में स्थिर वस्तु क्या है?

दादाश्री : जो पाँच इन्द्रिय से दिखाई देता है, उसमें स्थिर वस्तु होती ही नहीं है। रिलेटिव स्वभाव से सबकुछ चंचल ही है। आत्मा स्थिर है। सभी में तत्त्व स्थिर स्वभाव वाले हैं लेकिन जब यहाँ से (संसार में से) सभी मुक्त हो जाएँगे (रियल में आते हैं) तब स्थिर होंगे। तब तक जो सब एक साथ (रिलेटिव) है, वह पूरा चंचल ही है। अत: कोई स्थिर वस्तु है ही नहीं। वास्तव में आत्मा स्थिर है परंतु उसे इस चंचल का प्रसंग हुआ है। और उसे भी चंचल के रूप में घूमना पड़ता है। **(Pg-11)** यहाँ से मुक्त हो जाए, खुद के गुण स्वभाव को जान ले और ज्ञानी पुरुष अलग कर दें, तब फिर वह मुक्ति पाएगा। फिर उस मुक्ति में वह हमेशा के लिए स्थिर क्योंकि वहाँ पर अन्य कोई तत्त्व नहीं हैं। यदि अन्य तत्त्व होंगे तभी उसे परेशान करेंगे। वापस अपने साथ प्रवाह में खींच ले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : आत्मा परमानेन्ट है परंतु इस *पुद्गल* के साथ में मिक्सिंग क्यों हुई। अब फिर उसका रीज़न क्या है?

दादाश्री : कोई कारण नहीं है मिक्स होने का। ये सारे छः तत्त्व साथ में ही हैं, उसे लोक कहा गया है। परंतु लोक का मतलब क्या है? तो कहते हैं, 'संसार'। तो संसार क्या है? समसरण। समसरण का मतलब क्या है? निरंतर परिवर्तन। तो ये छः तत्त्व इस प्रकार से इकट्ठे होकर एक-दूसरे के पीछे घूमते ही रहते हैं। कभी भी (कम्पाउन्ड के रूप में) एक-दूसरे के साथ एकाकार नहीं हो जाते। इस प्रकार से (मिक्स्चर के रूप में) घूमते ही रहते हैं जैसे कि कभी भी अलग ही नहीं होना है। अभी भी अलग हैं। मनुष्यों के शरीर में भी अलग हैं परंतु यह सब विज्ञान से हो गया है। इससे इंसान उलझ गया है।

वस्तु अर्थात् अविनाशी। ये छः द्रव्य जब आमने-सामने इकट्ठे होते हैं तब अवस्था उत्पन्न होती है।

प्रश्नकर्ता : क्या वे छः द्रव्य एक-दूसरे में मिल जाते हैं?

दादाश्री : मिल जाते हैं। छः द्रव्यों के एक-दूसरे के (मिक्सर रूप में) मिलने से ही ऐसा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : ओतप्रोत हो जाते हैं क्या?

दादाश्री : परिवर्तित हो जाते हैं, ये सभी छः द्रव्य परिवर्तन वाले हैं। आकाश क्षेत्र है और उसके अंदर परमाणु यों घूमते रहते हैं। आत्मा और परमाणुओं के मिलने से फिर यह मिक्सर बन जाता है। जिसकी उत्पत्ति होती है, उसका विनाश है। अतः इस अवस्था की उत्पत्ति है। इसलिए इसका विनाश होता है, परंतु आत्मा तो उत्पन्न नहीं हुआ **(Pg-12)** और इसका विनाश नहीं होगा। इन छः सनातन तत्त्वों के आधार पर ही यह जगत् बना है।

प्रश्नकर्ता : छः तत्त्वों के इन्टरेक्शन से यह सब बना है। तो अभी भी ऐसा होता रहता है या एक बार हो कर फिर रुक गया?

दादाश्री : नहीं। यह निरंतर होता रहता है और चलता ही रहता है।

प्रश्नकर्ता : इसमें से अलग भी हो जाते हैं और फिर नए जुड़ते भी जाते हैं।

दादाश्री : उत्पन्न होते हैं, कुछ समय तक रहते हैं और फिर लय हो जाते हैं। इस प्रकार निरंतर होता रहता है।

प्रश्नकर्ता : अत: जब लय होते हैं तब मोक्ष हो जाता है?

दादाश्री : नहीं। जैसे कि जब एक व्यक्ति का जन्म होता है वह कुछ समय तक रहता है और फिर मर जाता है न, उसी प्रकार से यह पूरा जगत् चलता रहता है।

प्रश्नकर्ता : अब, द्रव्य और वस्तु...

दादाश्री : जिसमें से गुण और पर्याय उत्पन्न होते हैं, वह द्रव्य है।

प्रश्नकर्ता : और वस्तु?

दादाश्री : द्रव्य ही वस्तु है।

प्रश्नकर्ता : हम ये जो बातें कर रहे हैं न, अपने ये छ: तत्त्व और जैन जो बातें करते हैं, वह तत्त्व, इन दोनों में क्या फर्क हैं?

दादाश्री : एक ही हैं कोई फर्क नहीं है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा किस तरह से बदलता रहता है? परिवर्तित होता रहता है?

दादाश्री : यह सब जो दिखाई देता है न, वह सब यदि एक ही प्रकार का दिखाई देता रहे **(Pg-13)** तो परिवर्तन नहीं कहा जाएगा। और एक के बाद एक सब दिखता ही रहता है। खुद सभी को देखता

और जानता है। और सभी तत्त्व कुदरती रूप से घूमते ही रहते हैं। ऐसा करते-करते सभी तत्त्व इकट्ठे हो जाते हैं। उसमें जब *पुद्गल* और आत्मा दोनों पास में आते हैं, तब वहाँ पर ऐसा एडजस्टमेन्ट हो जाता है कि दोनों में ऐसे गुण उत्पन्न हो जाते हैं जो उनके खुद के गुण नहीं हैं। विशेष परिणाम उत्पन्न हो जाते हैं। किसी को ऐसी इच्छा नहीं है परंतु स्वभाव से ऐसा हो जाता है। सभी तत्त्वों का स्वभाव परिवर्तनशील ही है।

आत्मा परिवर्तनशील है, ज्ञेय के कारण

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है कि इस संसार में सभी चीज़ें परिवर्तनशील हैं, आत्मा भी परिवर्तनशील है। चैतन्य किस प्रकार से परिवर्तनशील हो सकता है, यह ज़रा समझाइए।

दादाश्री : चैतन्य के खुद के गुणधर्म हैं। गुण भी हैं और फिर धर्म भी हैं। गुण नित्य हैं और धर्म परिवर्तनशील हैं। जगत् में जितनी चीज़ें परमानेन्ट, सनातन, इटर्नल हैं, उन सब के गुण और धर्म दोनों होते हैं, तो आत्मा के गुण क्या हैं? तो अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति, अनंत सुखधाम, और भी बहुत सारे गुण हैं। उसके ये जो सभी गुण हैं, वे उसके शाश्वत, परमानेन्ट गुण हैं। अब, धर्म क्या है? अंदर जो परमानेन्ट गुण हैं, जैसे कि अनंत ज्ञान, ज्ञान अर्थात् एक प्रकार का प्रकाश, उस प्रकाश के बाहर जो अवस्थाएँ होती हैं, वे परिवर्तनशील होती हैं अर्थात् ज्ञेय के अनुसार ज्ञान बदलता रहता है। ज्ञेय परिवर्तनशील है इसलिए ज्ञान भी परिवर्तनशील हो जाता है। दर्शन, दृश्य भी परिवर्तनशील है इसलिए द्रष्टा भी परिवर्तनशील हो जाता है। उनके (ज्ञेयों और दृश्यों के) अधार पर उसकी खुद की जो (ज्ञान-दर्शन) अवस्था है, वह अवस्था परिवर्तित होती रहती है।

प्रश्नकर्ता : मूल आत्मा को तो अपरिवर्तनशील ही कहा जाता है न?

दादाश्री : ऐसा है कि इन (ज्ञेय-दृश्य) परिवर्तनशील को परिवर्तनशील ही देख सकता है। अपरिवर्तनशील नहीं देख सकता। **(Pg-14)** क्योंकि यदि वह खुद अपरिवर्तनशील ही है, तो कौन-कौन सा देखेगा वह? देखने वाला वही और देखने की चीज़ें बदलती रहें तो वह नहीं चलेगा न! देखने की चीज़ गई, उसके साथ में देखने वाला भी चला गया। फिर से देखने की चीज़ गई, उसके साथ ही देखने वाला भी चला गया। क्योंकि वस्तु के पर्याय विनाशी और परिवर्तनशील हैं। वस्तु के गुण अविनाशी और परिवर्तनशील हैं[1]* और वस्तु का द्रव्य अविनाशी और अपरिवर्तनशील है।

फर्क, विनाशी और परिवर्तनशील में

प्रश्नकर्ता : अब दादा, विनाशी और परिवर्तनशील, इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : विनाशी का तो नाश ही हो जाता है। एक वस्तु सनातन होने के बावजूद भी निरंतर परिवर्तनशील रहती है और विनाशी चीज़ तो परिवर्तनशील स्वभाव की कहलाती ही नहीं है। ये जो परिवर्तनशील है, विनाशी तो उसका कुछ ही भाग है। परिवर्तनशील तो आत्मा भी है। ये छहों तत्त्व परिवर्तनशील हैं।

प्रश्नकर्ता : छः तत्त्व परिवर्तनशील हैं, वह किस प्रकार से? छः तत्त्व और जो आत्मा की उपस्थिति में उत्पन्न हुआ है, वह विशेष परिणाम परिवर्तनशील है?

दादाश्री : विशेष परिणाम भी है। वह तो संसार की संदर्भ में देखा जाए तो वह विशेष परिणाम है।

प्रश्नकर्ता : हाँ, परंतु वही परिवर्तनशील है न?

---

1 (अधिक समझने के लिए आप्तवाणी श्रेणी - 3, पेज : 59 - 61, आत्म गुण : ज्ञान-दर्शन)

दादाश्री : परंतु स्वाभाविक की तुलना में देखा जाए तो वह परिवर्तनशील है। उसकी अवस्थाएँ होती हैं। आत्मा की अवस्थाएँ और पुद्गल की अवस्थाएँ, वे अवस्थाएँ विनाशी हैं।

प्रश्नकर्ता : 'अविनाशी के परिवर्तनशील स्वभाव से विनाशी चीज़ें उत्पन्न होती हैं', कृपया उदाहरण देकर यह समझाइए।

दादाश्री : (Pg-15) यह सब जो परिवर्तित होता है और यह सब जो दिखाई देता है, वह विनाशी है। क्षण भर में कुछ का कुछ, नीला हो जाता है और कुछ का कुछ हो जाता है, यह सब। अविनाशी तत्त्व दिखाई नहीं देता है और जो दिखाई देता है, वह विनाशी है। सभी विनाशी तत्त्व इधर से उधर होते रहते हैं परंतु उनके अंदर के जो तत्त्व हैं, वे अविनाशी हैं, परिवर्तनशील हैं। अंदर भ्रमणता ही करते रहते हैं। अन्य कुछ नहीं करते और वे घड़ी भर में ऐसे दिखाई देते हैं और घड़ी भर में वैसे दिखाई देते हैं। घड़ी भर में बादल इस तरफ दिखाई देते हैं और घड़ी भर में बिखर जाते हैं और इधर से उधर चले जाते हैं, घड़ी भर में वापस मेघधनुष दिखाई देता है, घड़ी भर में वह फिर से गायब हो जाता है। मूल स्वरूप अविनाशी है, इस जगत् में मूल सब अविनाशी ही है। विनाशी दिखाई देता है जबकि अविनाशी आँखों से दिखाई नहीं देता।

ये सभी परमाणु जो हैं, वे सभी विनाशी हैं। वह यों घूमते ही रहते हैं, निरंतर घूमते ही रहते हैं। एक परमाणु दूसरे परमाणु को पार करे उतने भाग को समय कहा गया है। उस पर से काल का निमित्त निकाला। इस प्रकार से यह सारा निरंतर परिवर्तित होता ही रहता है। आत्मा और बाकी के सब निरंतर परिवर्तित होते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : ये जो परमाणु निरंतर घूमते रहते हैं, आप क्या उन्हें परिवर्तनशील कहते हैं?

दादाश्री : नहीं तो और क्या? एक स्थिति में नहीं रहते। स्थिति निरंतर बदलती ही रहती है। अवस्था निरंतर बदलती ही रहती है।

प्रश्नकर्ता : उसे परिवर्तनशील कहा है तो आत्मा अविनाशी है और परिवर्तनशील है, वह किस प्रकार से?

दादाश्री : कोई भी (वस्तु) अविनाशी कब कहलाती है? वस्तु यदि परिवर्तनशील हो, तभी वह वस्तु है वर्ना वह वस्तु है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : तो सभी वस्तुएँ परिवर्तनशील हैं?

दादाश्री : (Pg-16) हाँ, सभी वस्तुएँ...

प्रश्नकर्ता : नाशवंत और अविनाशी, दोनों ही?

दादाश्री : नहीं, नाशवंत तो अवस्थाएँ हैं परंतु यह तो अंदर परिवर्तनशील अर्थात् पर्याय निरंतर बदलते ही रहते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे अपने स्वभाव में रहकर बदलते रहते हैं?

दादाश्री : स्वभाव में रहकर।

प्रश्नकर्ता : आत्मा अविनाशी है। अब इसमें आत्मा का कौन सा परिवर्तन होता है?

दादाश्री : यह आत्मा, मूल चेतन द्रव्य है और फिर उसमें गुण हैं। उनमें से कुछ गुण हैं, अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन व अनंत शक्ति, तो आप ज्ञान से नहीं देखते हो, पर्याय से देखते हो। ज्ञान तो उसका गुण है। गुण नहीं बदलता। उसका पर्याय ही बदलता है। गुण निरंतर साथ में ही रहता है। जब विनाशी वस्तु में परिवर्तन होता है तब उससे आत्मा की ज्ञान शक्ति में परिवर्तन हो जाता है क्योंकि अवस्थाओं को 'देखने वाला' 'ज्ञान' हैं। जैसे ही अवस्था बदलती है, वैसे ही ज्ञान पर्याय बदल जाता है। पर्याय निरंतर परिवर्तित होते ही रहते हैं। फिर भी उनमें ज्ञान शुद्ध ही रहता है, संपूर्ण शुद्ध रहता है, सर्वांग शुद्ध रहता है।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान किस रूप में बदलता है? पर्याय के रूप में?

दादाश्री : हाँ। और खुद के पर्यायों को भी जो जानता है, वही वह खुद है, शुद्धात्मा है।

प्रश्नकर्ता : परंतु उससे विनाशी चीज़ें उत्पन्न होती हैं?

दादाश्री : वे विनाशी हैं इसीलिए तो वे यों दिखाई देती हैं। एक चीज़ दूसरी जगह जा रही हो तो तीसरे के प्रतिस्पंदन दिखाई देते हैं हमें। हम आकाश की तरफ देखते हैं और घड़ी भर में बादल आ जाते हैं। वे बादल ब्लैक (काला) हो तो हमें कुछ भी नहीं दिखाई देता परंतु दो-पाँच मिनट **(Pg-17)** बाद वापस ज़रा हट जाते हैं तो अंदर से कुछ लाल-लाल दिखाई देता है। उसका क्या कारण है? अभी कुछ देर पहले नहीं दिखाई दे रहा था। तो वह यह कि, एविडेन्स बदल गए और उसका जो...

प्रश्नकर्ता : तब तो उसे रूपांतरण कहिए, परिवर्तन मत कहिए।

दादाश्री : उसे रूपांतरण नहीं कह सकते। रूपांतरण शब्द तो एक ही तत्त्व पर लागू होता है। रूपांतरण शब्द किस पर लागू होता है कि ये रूपी तत्त्व हैं न, सिर्फ *पुद्गल* पर और वे भी परिवर्तनशील ही कहलाते हैं। रूपांतरण तो स्थूल को कहा जाता है, बाहर के भाग को। मूल जो *पुद्गल* है न, वह परिवर्तनशील है। जो अंदर शुद्ध ही रहे, उसे तत्त्व कहते हैं। आत्मा के गुण क्या हैं? तो वे हैं, (ज्ञान-दर्शन) गुण स्टेडी (स्थायी) रहते हैं और अवस्था कौन सी? तो कहते हैं, जो देखी जा सकती हैं, जानी जा सकती हैं, वे सभी अवस्थाएँ हैं।

प्रश्नकर्ता : परिवर्तनशील शब्द तो सामान्य भाषा में आ जाता है।

दादाश्री : सामान्य भाषा का ही शब्द है यह, मूल भाषा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : मूल भाषा का तो कौन सा है?

दादाश्री : लेकिन मूल भाषा का अर्थ काम का ही नहीं है। आपको क्या काम आएगा। यहाँ पर जिस भाषा का उपयोग होता है, वही काम की है।

आत्मा से संबंधित ही कातते हैं ये लोग। यहाँ पर जो सारी बातें पूछते हैं, उसे आत्मा से संबंधित कातना कहा जाएगा। संसार से संबंधित कातने में, कषाय से संबंधित कातने में, पुण्य से संबंधित कातने में, पाप से संबंधित कातने में और इस कातने में बहुत फर्क है। इसमें टाइम निकाला न, वह कुछ और ही तरह का है। इस दुनिया में कोई इस पर टाइम बिगाड़ेगा ही नहीं न, क्योंकि इस चीज़ की चर्चा ही नहीं होती। अपने यहाँ जो बातें होती हैं न, वे बातें वर्ल्ड में कोई किसी जगह पर कर ही नहीं सकता।

प्रश्नकर्ता : आप जो कह रहे हैं, वह समझ में नहीं आया। आप जो कहते हैं, **(Pg-18)** वह नीरू बहन टेप करती हैं। लेकिन टेपरिकॉर्डर ऐसा नहीं कहता कि आप यह क्या कहना चाह रहे हो? इसलिए खुलासे के लिए पूछना पड़ता है।

दादाश्री : खुलासे के लिए पूछना है वह तो, पूछो वह। वह जो पूछते हो, वह टाइम किसमें आता है, उसकी कीमत बता रहा हूँ। एक घंटे के लिए ऐसे ध्यान में रहे न, तो भी काम निकाल देगा क्योंकि भगवान ने इस ध्यान को *पुद्गल* में नहीं माना है। रिलेटिव रियल में माना है। पूरा ही जगत् रिलेटिव की बातें करता है जबकि यह रिलेटिव रियल की बातें हैं।

छः इटर्नल्स का रिवॉल्यूशन

प्रश्नकर्ता : पाँच तत्त्वों के साथ में छठे तत्त्व का मिलाप किस तरह से होता है?

दादाश्री : ये छः तत्त्व इस जगत् में भ्रमण कर रहे हैं। और उसमें भी फिर, ये सभी तत्त्व ऐसे हैं कि कोई किसी की मदद नहीं

करता, कोई किसी पर उपकार नहीं करता, कोई किसी का कर्ता नहीं है, कोई किसी को दु:ख नहीं देता, एकाकार नहीं होता, ऐसे तत्त्व हैं। अत: ये सब क्लियर हैं। इस जगत् में जो आकाश है, ये तत्त्व उसमें सिर्फ समसरण करते रहते हैं निरंतर और घूमते ही रहते हैं, बस।

अब, वास्तव में इन छ: वस्तुओं में से कोई किसी पर डिपेन्डेन्ट हैं ही नहीं। वह तो ऐसा लगता है कि ये डिपेन्डेन्ट हैं, डिपेन्डेन्ट हैं ही नहीं अपने-अपने स्वभाव में ही रहते हैं। जगत् बहुत विशाल है समझने जैसा है। आपको जो-जो विचार आते हैं वह बताओ न, कहो न, पूछो न... सब पूछो न!

प्रश्नकर्ता : ये इकट्ठे कब हुए?

दादाश्री : ये सभी जो परमाणु हैं, वे इस तरह से रिवॉल्व होते रहते हैं। और चेतन के साथ भी रिवॉल्व करते हैं। सब के इकट्ठे होते ही तुरंत आवरण आ जाते हैं। बाद में जब अलग करते हैं तब आवरण टूट जाते हैं और अलग हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : (Pg-19) इकट्ठे हुए, इसका अर्थ तो ऐसा हुआ न कि कभी तो अलग थे।

दादाश्री : सभी, छ: के छ: इस तरह गोल घूमते-घूमते-घूमते रिवॉल्व होते हैं, तब इकट्ठे हो जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : अत: शुरुआत से ही छहों रिवॉल्व होते ही रहते हैं।

दादाश्री : हं... सब। ये इकट्ठे हुए तो सिक्स इटर्नल्स के रिवॉल्युशन को कहते हैं, जगत्।

ये हैं ब्रह्मांड के छ: तत्त्व

इस जगत् को तो किसी ने बनाया ही नहीं है। सभी चीज़ें नित्य ही हैं।

प्रश्नकर्ता : दादा वे कौन-कौन सी हैं? इन छः तत्त्वों का कार्य क्या है? यह सब समझना है।

दादाश्री : ये सभी तत्त्व अपना-अपना कार्य करते रहते हैं। इनमें से एक आत्मा है, जो मूल चेतन है, जिसे चेतन कहा गया है। और दूसरा है जड़, उसे अणु कहते हैं न, अणु-परमाणु। तीसरा जो है वह, इन दोनों में शक्ति नहीं है, आने-जाने की तो वह शक्ति इन्हें ले जाती है, उसे कहते हैं धर्मास्तिकाय। अब यदि सिर्फ धर्मास्तिकाय ही होता तो फिर अगर यहाँ से जाने को निकलता तो खड़ा ही नहीं रह पाता। अतः स्थिर करने के लिए स्थितिसहायक है। ये चार हुए न? पाँचवाँ तत्त्व आकाश है, जिसमें कि हर एक तत्त्व जगह माँगता है, जगह चाहिए न? जगह के बिना कैसे चलेगा? अतः जगह देना वाला पाँचवाँ तत्त्व आकाश है और छठा है काल तत्त्व। और काल तो अणु सहित है, खुद के कालाणु।

अतः ये छः तत्त्व हैं। काल, आकाश, गतिसहायक, स्थितिसहायक, जड़ और यह आत्मा। इसमें एक ही वस्तु अर्थात् जड़ रूपी है।

प्रश्नकर्ता : रूपी का मतलब क्या है?

दादाश्री : (Pg-20) रूपी अर्थात् सभी कुछ दिखाई देता है, इन्द्रियों से अनुभव किया जा सकता है इसलिए रूपी है। तो सिर्फ, यह जड़ ही रूपी है। आत्मा रूपी नहीं है, यह आकाश रूपी नहीं है। यह समय भी (काल) रूपी नहीं है, यह जो गतिसहायक है, वह भी रूपी नहीं है। यह जो स्थितिसहायक है, वह रूपी नहीं है। पाँच अरूपी हैं और एक रूपी है। पाँच अचेतन हैं और सिर्फ आत्मा चेतन है। इस प्रकार यह छः तत्त्वों से बना है।

ये बातें तो ऐसी हैं कि बहुत गहरी बातें हैं। ये ज्ञानी पुरुष से जानने योग्य हैं। इन्हें जानने के बाद में अन्य कुछ भी जानना बाकी नहीं रहता। पूरे विश्व के पैंतालीस शास्त्र (आगमे) इसमें आ जाते हैं।

तीर्थंकर कहते हैं कि चेतन है, और फिर परमाणु, तीसरा काल तत्त्व, उसके बाद आकाश तत्त्व हैं। चौथा धर्मास्तिकाय और अधर्मास्थिकाय। ये (काल के अलावा अन्य) पाँच अस्तिकाय कहलाते हैं। तीर्थंकरों ने ऐसे छः तत्त्वों की खोज की है, केवलज्ञान से।

तत्त्व किसे कहा जाता है?

तत्त्व कब कहलाता है कि वह अपने गुणधर्म सहित हो तभी तत्त्व कहलाता है और सत् होता है।

प्रश्नकर्ता : सत् किसे कहेंगे?

दादाश्री : इस संसार का सत् तो विनाशी होता है, उसे सत्य कहते हैं। संसार में जिसे ट्रुथ कहते हैं न, वह सत्य विनाशी होता है। और वास्तव में जो सत् है, वह अविशानी होता है। वह अविनाशी, 'आपका' स्वरूप है। और इस जगत् का सत्य तो भागवान के वहाँ पर असत्य है। यह तो रिलेटिव सत्य है, रियल सत्य नहीं है। रियल सत्य कभी भी नाशवंत नहीं हो सकता। यदि रिलेटिव सत्य को ही आप सत्य ठहराने जाओगे तो फिर क्या हो सकता है?

फिर और क्या पूछना है, सत् का खुलासा हुआ आपको?

प्रश्नकर्ता : पूरी तरह से नहीं हुआ अभी?

दादाश्री : (Pg-21) हाँ, क्या पूछना है? बताओ अब।

प्रश्नकर्ता : आत्मा जो है, वह सत् कहलाता है?

दादाश्री : जितनी भी सनातन वस्तुएँ हैं, वे सभी सत् कहलाती हैं। छः इटर्नल हैं, वे सभी सत् कहलाते हैं। आत्मा सत् है।

रियल में नहीं हैं कोई लेना-देना

प्रश्नकर्ता : आकाश, गतिसहायक, स्थितिसहायक, परमाणु और काल, क्या ये सभी सापेक्ष कहलाते हैं? उदाहरण के रूप में यदि यहाँ

से वहाँ गए तो गति हुई, उसके बाद स्थिति है। यदि गति नहीं है तो स्थिति नहीं है तो आकाश भी नहीं है।

दादाश्री : जहाँ पर गति है और स्थिति है, वहाँ पर आकाश है ही।

प्रश्नकर्ता : अत: यह तो नॉन रिलेटिव बात हुई। ये रिलेटेड स्पेस की बात नहीं है।

दादाश्री : रियल में आत्मा की स्पेस नहीं होती, स्थिति भी नहीं होती। स्थिति तो सापेक्ष है, गति भी सापेक्ष है।

देहधारी आत्मा अवकाश के बिना हो ही नहीं सकता न! जो देहधारी नहीं है, ऐसा आत्मा यहाँ पर है ही नहीं। अत: रियल में सभी तत्त्वों का लेना-देना है ही नहीं, संबंध ही नहीं है। अत: जहाँ हम रहते हैं वहाँ उस घड़ी यदि दूसरा तत्त्व उसके आस-पास हो तो आत्मा कोई मालिक नहीं है कि अन्य तत्त्वों से कह सके कि आप यहाँ से चले जाओ।

प्रश्नकर्ता : अव्यवहार राशि में से जीव जब व्यवहार राशि में आया तब पहले उसे काल चिपका या *पुद्गल* चिपका या फिर क्या चिपका? सब से पहले उससे कौन सा तत्त्व चिपकता है?

दादाश्री : काल की वजह से इसमें (व्यवहार में) आ पड़ा। (काल) यों प्रवाह की तरह बहता है। कोई भी प्रवाह आए तो उसकी (आत्मा की) बारी आएगी या नहीं? **(Pg-22)** उसी प्रकार से यह भी आ जाता है। कोई इसे डालने वाला नहीं है। इसके पीछे नियति है। नियति अर्थात् प्रवाह!

नियति कहेगी कि 'यह मैंने किया'। तब फिर काल कहेगा, 'तू क्या कर सकता है? मैं था तब हुआ।' यानी कि कोई किसी को अपना *ऊपरी* नहीं बनने देता। कोई भी *ऊपरी* नहीं है, ऐसा सिद्ध करते हैं।

कितने ही लोगों ने तो ऐसा ही माना हुआ है कि यह जगत् नियति के अधीन ही है। शास्त्रकारों ने आपत्ति उठाई। वर्ना, नियति का रौब पड़ जाता कि यह सब मेरी वजह से चल रहा है। अत: कोई भी इस दुनिया में ऐसा नहीं कह सकते कि यह दुनिया मेरी वजह से चल रही है। आत्मा ऐसा नहीं कह सकता कि यह मेरी वजह चल रहा है, *पुद्गल* भी ऐसा नहीं कह सकता। ऐसा निमित्त-नैमित्तिक है सारा। सूर्य और समुद्र दोनों जब मिलते हैं तभी से यह भाप बनने लगी। नहीं मिले होते तो नहीं होता। ऐसा लगता है न, आपको?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : फिर भी मुख्य भाग किसका है? इस *पुद्गल* का भाग है, मुख्य। काल की तो हमें बहुत पड़ी नहीं है। बाकी, काल का हम से क्या लेना-देना? पहचाना नहीं जाता, पता भी नहीं चलता। अत: उसे माइनस कर दें। यह गतिसहायक, स्थितिसहायक और हमारा कोई लेना-देना नहीं है। अत: तीन को निकालने के बाद चौथा है, आकाश। फिर आकाश तो हम जानते हैं कि आकाश अर्थात् जो जगह देता है। अत: आकाश को हम से कोई लेना-देना नहीं है। अब चार में से भी कम कर देते हैं सिर्फ ये जड़ और चेतन (हम खुद), दो ही तत्त्वों की मारा-मारी है। बाकी के चार तत्त्व उनकी हेल्प करते हैं।

आत्मा किसमें फँसा है?

प्रश्नकर्ता : जिस प्रकार इस जड़ तत्त्व में, *पुद्गल* में आत्मा फँस जाता है, उसी प्रकार क्या अन्य किसी तत्त्व में फँस सकता है?

दादाश्री : (Pg-23) मुख्य तो सिर्फ यह जड़ तत्त्व, सिर्फ *पुद्गल* ही है।

प्रश्नकर्ता : आकाश तत्त्व या ऐसे अन्य किसी तत्त्व में फँस सकता है?

दादाश्री : यों तो हम सब इन सभी तत्त्वों में फँसे हुए हैं। आत्मा के सिवा अन्य जो पाँच हैं, अभी उन सभी में फँसे हुए हैं। सभी ने हमें बाँधा हुआ है।

प्रश्नकर्ता : भगवान सिर्फ आकाश में फँसे हुए हैं या सभी तत्त्वों में फँसे हुए हैं?

दादाश्री : ऐसा नहीं है। ये जो फँसे हुए हैं, वे सभी तत्त्वों की वजह से फँसे हुए हैं और वैज्ञानिक कारण है उसका। वैज्ञानिक परेशानी है। फँसे हुए हैं, ऐसा किसे कहते हैं कि मैं धोती पहनकर रास्ते में जा रहा हूँ और हवा से धोती उड़कर, उस तरफ पास में काँटे के जाल में फँस जाती है तो फिर वहाँ पर उसे निकालने की झंझट करूँ, तब तक तो दूसरी बार हवा आती है और दूसरी तरफ फँस जाती है? यानी कि काँटे की बाड़ हमें छोड़ती नहीं है। अत: हम क्या समझते हैं कि हम फँस गए या जाल फँसा?

प्रश्नकर्ता : हम फँसे।

दादाश्री : हाँ, उसी प्रकार से आत्मा फँस गया है। अनंत शक्ति का धनी! लेकिन शक्ति का क्या करे? सिर फोड़े?

प्रश्नकर्ता : ऐसा नहीं मानना है कि सिर्फ जड़ तत्त्व में फँसा हुआ है, सभी तत्त्वों में फँसा हुआ है।

दादाश्री : यह जड़ में फँसा तो फँसा, लेकिन सभी तत्त्वों के अंदर फँस गया है। अब जब सभी तत्त्वों की और जड़ की व खुद की, पहचान हो जाएगी तो तुरंत ही छूट जाएगा। जिन्होंने मुझे बाँध रखा है, वे तत्त्व ऐसे हैं और मैं ऐसा हूँ, जब ऐसा भान होगा तब अलग हो जाएगा। यह तो, अभानता से चल पड़ा कि यह भी मेरा गुण है और यह अरूपी भी मेरा गुण है, ऐसा कहता है। जबकि अन्य तत्त्व भी अरूपी तो हैं ही। **(Pg-24)** उससे आत्मा वापस वैसा ही हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : जड़ के अलावा सभी अरूपी हैं।

दादाश्री : अरूपी हैं, फिर भी चेतन नहीं हैं और हम चेतन को अरूपी करके उस पर मदार रखते हैं। तभी कहते हैं न, 'मार खाएगा!'

अनादि से छहों साथ में ही

प्रश्नकर्ता : यदि पाँचों तत्त्व नहीं होते तो आत्मा कहाँ पर होता?

दादाश्री : ऐसा दिन ही नहीं उगा, जब ये पाँच तत्त्व नहीं थे। आत्मा अभी उनके आधार पर ही रहा हुआ है। वह जब खुद के स्वरूप को जान लेगा तब यहाँ से मुक्त होगा। तब पाँच तत्त्व बंद हो जाएँगे। वर्ना, पाँच तत्त्व आत्मा के साथ में ही हैं, वे फिर छोटे से जीव के रूप हों या बड़े रूप में या फिर पेड़ के रूप में हों। पेड़ में भी पाँच तत्त्व और छोटे से छोटे जीव में भी पाँच तत्त्व हैं। दो इन्द्रिय में भी पाँच तत्त्व, तीन इन्द्रिय में भी पाँच तत्त्व, चार इन्द्रिय में भी पाँच तत्त्व और इन पाँच इन्द्रिय में भी पाँचों तत्त्व साथ के साथ ही हैं।

इस शरीर में एक साथ छहों तत्त्व हैं। ये तत्त्व मिक्स्चर के रूप में हैं, कम्पाउन्ड नहीं हैं। अत: इसे अलग किया जा सकता है। कम्पाउन्ड हो जाए तो आत्मा के गुण बदल जाएँगे। और इस जड़ के गुणधर्म भी बदल जाएँगे।

इसमें आत्मा का कुछ नहीं बिगड़ा है। आत्मा इसमें संयोगी पदार्थ है। सभी वस्तुएँ, ये छ: इकट्ठी हो जाती हैं, वे संयोगी हैं। अत: ज्ञानी पुरुष वापस इसे अलग कर देते हैं और आत्मा को अलग कर देते हैं। आत्मा शुद्ध ही है, स्वच्छ ही है, सिर्फ बिलीफ रोंग है।

विकल्प लिमिटेड, आत्मगुण अन्लिमिटेड

जगत् तो बहुत बड़ा, विशाल है, समझने जैसा है। कुछ हुआ ही नहीं है। यह पूरा उन्हीं छः तत्त्वों का ही सम्मेलन है, **(Pg-25)** अन्य कुछ नहीं है। उसमें में तो कितनी ही चीज़ें, विकल्प कितने सारे! तब यदि कोई पूछे कि कितने विकल्प हैं? उनकी कोई लिमिट-विमिट है? तो कहते हैं, इस जगत् में कोई भी चीज़ अन्लिमिटेड नहीं है। ये सभी चीज़ें लिमिट वाली हैं। लिमिट वाली नहीं होतीं तब तो कोई उनका पार ही नहीं पा सकता था, मोक्ष की तो बात ही नहीं होती। सभी कुछ लिमिट वाला है। यह लिमिट वाला है, इसीलिए तो हमें मोक्ष मिल सकता है। वर्ना, ये कढ़ापा-अजंपा और बेहिसाब चिंता होती।

प्रश्नकर्ता : यदि सभी कुछ लिमिट वाला है तो फिर अनंत शब्द कहाँ से आया?

दादाश्री : अनंत इस पर लागू नहीं होता। 'अनंत' का और इसका क्या लेना-देना? यह सब लिमिट वाला है अनंत तो हम, आत्मा के गुण हैं, ऐसा कहते हैं। वह भी आपको समझाने के लिए क्योंकि उन लोगों को (छः तत्त्वों को) तो छः तत्त्व जानने की ज़रूरत ही नहीं है। यह तो 'आपको' आपका भान करवाने के लिए है कि 'आप' कैसे हो। वर्ना, उन्हें जाना ही नहीं है यह तो जो मूर्च्छित हो गया है, उसे होश में लाना है। उसे ऐसा कहना है कि भाई तू अनंत ज्ञान वाला है, तू अनंत दर्शन वाला है परंतु जो होश में है उसे तो कुछ कहना ही नहीं पड़ेगा।

यदि यह अन्लिमिटेड होता न, तो ये सभी लोग जो एक सरीखे दिखाई देते हैं, वैसा सब एक सरीखा नहीं होता। किसी के तीन पैर होते, किसी के साढ़े तीन पैर होते, किसी के तीन हाथ होते, किसी के चार हाथ होते, किसी की तीन आँखें होतीं लेकिन नहीं, ऐसा नहीं है। यदि अन्लिमिटेड होते न, तो दूसरे शरह से जो लोग आते हैं, वे

कुछ अलग ही तरह के दिखाई देते। उस शहर के अलग। अत: लिमिटेड है, वह एक्ज़ेक्ट है। किसी भी देश में जाओ तो इंसान दो पैरों वाला और, सब एक सरीखा दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : एक तत्त्व दूसरे तत्त्व में मिलता ही नहीं है? वे दोनों अलग ही रहते हैं न?

दादाश्री : (Pg-26) वे नहीं मिलते। उनके इकट्ठे होने से अवस्थाएँ उत्पन्न होती हैं।

प्रश्नकर्ता : मिलते हैं या वे एक-दूसरे के नज़दीक आने से अवस्था उत्पन्न होती है?

दादाश्री : हाँ, वही न! घूमते-घूमते जब मिलते हैं तब अवस्थाएँ बदलती रहती हैं। मूल वस्तु में कोई भी बदलाव नहीं आता।

प्रश्नकर्ता : फिर भी वे छ: तत्त्व तो अलग ही रहेंगे न?

दादाश्री : हाँ, वे हमेशा के लिए अलग ही हैं, अभी भी अलग हैं। अभी भी, शरीर में हैं फिर भी अगल हैं।

प्रश्नकर्ता : उनके गुण-दोष अलग ही होते हैं?

दादाश्री : सबकुछ अलग, स्वतंत्र! गुण-दोष अलग! तो इन तत्त्वों को हम अलग कर देते हैं। जैसे कि सोना और तांबा दो मिल गए हों तो सुनार उन्हें अलग कर देता है तो उसी प्रकार से ज्ञानी पुरुष अलग कर सकते हैं। भेद विज्ञानी, जिनके पास भगवान का प्रतिनिधित्व हो, वे इसके भाग कर सकते हैं। तब फिर आत्मा अलग हो जाता है। आत्मा अलग हो जाए तो फिर कर्म नहीं बंधते। जब तक ऐसा भान हैं कि, 'मैं कर रहा हूँ' तभी तक कर्म बंधते हैं। 'मैं कौन हूँ' ऐसा भाग हो जाए तो फिर कर्म नहीं बंधते।

प्रश्नकर्ता : उस आत्मा का अस्तित्व भी किसी कारण की वजह से है न?

दादाश्री : अस्तित्व का कारण नहीं होता न! जो अस्तित्व है, वह कैसा है? यह जो अस्तित्व है, वह वस्तुत्व वाला है, सनातन है। सनातन पर कोई कारण लागू ही नहीं होता। सभी कारण लागू होते हैं अवस्थाओं पर। 'खुद' अवस्था में है, और जो दिखाई देती हैं, वे सब भी अवस्थाएँ ही हैं।

मुक्त ही दिलवा सकते हैं मुक्ति

(Pg-27) इस जगत् में छः ही तत्त्व हैं और हर एक तत्त्व निज स्वभाव में ही है। और हर एक अपना ही काम करता है, फिर भी ये छः तत्त्व अनंत काल से हैं। पाँच अचेतन और छठा खुद चेतन, जो सभी कुछ जानता है। इनमें से एक (*पुद्गल* परमाणु) तत्त्व ऐसा है कि वह खुद (चेतन) जैसे नखरे करता है और वैसा ही बन जाता है। रूपी को देखकर खुद रूपी बन जाता है। मूलतः खुद अरूपी है। उसके खुद के हाथ डालने से रूपी डिस्टर्ब हो जाता है लेकिन नाश किसी का भी नहीं होता। अवस्थाओं का नाश होता है। हाथ डालने से संसार और नहीं डालने से मोक्ष है। हाथ कब नहीं डालेगा? जब खुद भान में आ जाएगा, तब।

वेद के भी *ऊपरी* को भेद विज्ञानी कहा जाता है। जो आत्मा और अन्य पाँच तत्त्वों को अलग कर देते हैं। हमारी सिद्धियाँ इसी चीज़ के लिए चलती हैं कि लोग तत्त्व स्वरूप की प्राप्ति करें।

जहाँ बुद्धि नहीं है वहाँ पर है आत्मज्ञान

तत्त्व वस्तु को जानना हो तो जहाँ पर बुद्धि नहीं है, वहीं पर जानने को मिलेगा। अन्य किसी भी जगह पर तत्त्व नहीं है क्योंकि बुद्धि की लिमिटेशन्स हैं और ज्ञान अन्लिमिटेड है। वे ज्ञानी पुरुष होने चाहिए। ज्ञानी तो वर्ल्ड में शायद ही कभी होते हैं। ज्ञानी होते ही नहीं हैं न! वर्ल्ड में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं हैं कि जो ज्ञानी के ज्ञान से बाहर हो। यह मैं देखकर बता रहा हूँ। यह कोई पुस्तक की बात नहीं

है। पुस्तक काम नहीं आएगी न! पुस्तक की बातें हमेशा जड़ होती हैं और यदि आपने वह चीज़ पुस्तक में से ग्रहण की होगी तो क्या होता? वह भी जड़ होती है। ज्ञान से डॉइरेक्ट मिलना चाहिए। डॉइरेक्ट प्रकाश होना चाहिए तभी निबेड़ा आएगा। निरंतर जागृति है दादा की, इसलिए वे उसे समझ सकते हैं। आत्मा को फुल्ली अन्डस्टैन्ड कर (समझ) लिया है। यह सब अनवेल्ड (निरावृत) आत्मा से ही देखा जा सकता है।

❖❖❖❖❖

[2]

आत्मा, अविनाशी तत्त्व

आत्मा का स्वरूप

प्रश्नकर्ता : (Pg-28) आत्मा क्या है?[2]*

दादाश्री : आत्मा वस्तु है। वस्तु अर्थात् इटर्नल चीज़ है और खुद के द्रव्य, गुण व पर्याय सहित है। खुद के वस्तुत्वपने को संभाले रखता है। खुद के सभी गुणों को भी संभाले रखता है और उसकी अवस्थाएँ भी हैं।

छः तत्त्वों में से एक है, चेतन तत्त्व। जिसे हम आत्मा कहते हैं, शुद्धात्मा कहते हैं या भगवान कहते हैं, वह चेतन तत्त्व है, और बाकी के पाँचों ही तत्त्व अचेतन हैं अर्थात् उनमें चेतनता नहीं है।

अतः ये जो सारे तत्त्व हैं, उनमें से यदि कोई परम तत्त्व है तो वह है, परमात्मा। परम तत्त्व, जिसका नेतृत्व है, जो सब से बड़ा तत्त्व है, अनंत शक्ति का धनी है, वह परमात्मा है। आत्मा अर्थात् परम तत्त्व, जिसमें चेतन है। अन्य किसी में चेतन नहीं है। अन्य तत्त्वों में बहुत ही शक्ति है, ज़बरदस्त। इसीलिए तो ये पूरा जगत् ऐसा दिखाई देता है लेकिन चेतन नहीं है इसलिए उनमें ज्ञान नहीं है। और जहाँ पर ज्ञान नहीं है, वहाँ पर आत्मा नहीं है, परमात्मा नहीं है।

चेतन तत्त्व, कोई एक तत्त्व नहीं है, अनंत चेतन तत्त्व हैं। उन सब को इकट्ठा किया जाए न, तो सब एक ही स्वभाव वाले हैं। जैसे कि यदि सोने की सिल्लियाँ हों। वे करोड़ों होंगी फिर भी सोना ही कहलाएगा न! **(Pg-29)** इसलिए उसे चेतन तत्त्व कहा गया है। वह तत्त्व स्वतंत्र है और अनादि अनंत है।

2 आप्तवाणी श्रेणी - 14 भाग-3 और भाग-4 में आत्म तत्त्व के द्रव्य-गुण-पर्याय से संबंधित विशेष वाणी है।

अनंत आत्माएँ हैं और सभी हैं ही और रहेंगे ही। उन्हें कुछ भी नहीं होने वाला। यह बात वीतरागों द्वारा, महावीर भगवान द्वारा कही गई है। निरंतर उसका एग्ज़िसटेन्स (अस्तित्व) है। अविनाशी तत्त्व है। मोक्ष में भी उसी रूप में है। अभी भी उसी रूप में है। लेकिन उसका भान हो जाना चाहिए।

फर्क, आत्मा-अनात्मा तत्त्वों में

आत्मा तो कभी भी अनात्मा बन ही नहीं सकता। चैतन्य कभी भी अचैतन्य नहीं हो सकता। उसका कोई भी टुकड़ा, कोई भी पीस अचैतन्य नहीं हो सकता। और जो अचैतन्य है उसे, जैसे हम प्याज़ काटते हैं न, उसकी स्लाइस करते हैं न, अनात्मा विभाग की वैसी चाहे कितनी भी स्लाइस करें तब भी, एक भी टुकड़ा ऐसा नहीं निकलेगा कि जिसमें प्रकाश हो। दोनों अलग-अलग वस्तुएँ हैं। और फिर स्वाभाविक वस्तुएँ हैं। ये कोई ऐसी-वैसी वस्तुएँ नहीं हैं। स्वाभाविक अर्थात् खुद स्वभाव सहित है।

आत्मा की कोई भी बात विनाशी नहीं है। उसका स्वभाव, उसके गुण भी विनाशी नहीं हैं। वह तो, आत्मा की सिर्फ अवस्था, सिर्फ वही उत्पन्न होती है, विनष्ट होती है। निरंतर वैसा होता ही रहता है। और खुद ध्रव रहता है। अब आत्मा की सभी अवस्थाएँ चेतन हैं और *पुद्गल* की सभी अवस्थाएँ अचेतन हैं।

आत्मा शुद्ध चेतन है। यह जो दिखाई देता है, वह मिश्रचेतन दिखाई देता है। और जो शुद्ध चेतन है, वह शुद्धात्मा है और वही परमात्मा है।

प्रश्नकर्ता : आत्मा का अशुद्ध स्वरूप भी हो सकता है क्या?

दादाश्री : यह जो प्रकृति स्वरूप है, वह आत्मा का अशुद्ध स्वरूप है।

निश्चय, परम तत्त्व भगवान स्वरूपी है और व्यवहार तो अलग है ही न! आप अभी अलग बैठे हो न और ये साहब अलग बैठे हैं। **(Pg-30)** हर एक की जगह तो अलग ही है लेकिन एक जगह पर दो-चार नहीं रह सकते न? उसी को कहते हैं कि व्यवहार अलग है। और अपना निश्चय एक ही है, आत्मा। जैसा यह आत्मा है, वैसा यह आत्मा है, एक समान स्वभाव वाले ही हैं।

प्रश्नकर्ता : चेतन तत्त्व कुबूल है परंतु चेतन तत्त्व का धारक अन्य कोई तत्त्व होना चाहिए या नहीं?

दादाश्री : नहीं, उसका कोई धारक है ही नहीं। चेतन तत्त्व, चेतन ही है और स्वाभाविक है। चेतन तत्त्व पूरा ही आपके अंदर बैठा हुआ है। जीवमात्र के अंदर बैठा हुआ है और उसे किसी की ज़रूरत नहीं पड़ी है। अवलंबन नहीं है, चेतन तत्त्व अवलंबन रहित है। यदि अवलंबन होता न, तब तो लोग उसे मार डालते लेकिन चेतन ही भगवान है।

प्रश्नकर्ता : अर्थात् निरालंबी है?

दादाश्री : हाँ, निरांलबी है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन चेतन का धारक तत्त्व, अद्वैत वेदांत में उसके लिए परात्पर चैतन्य शब्द का प्रयोग किया गया है।

दादाश्री : परात्पर का मतलब ही है शुद्ध चेतन। उसे किसी का अवलंबन नहीं है। मैं देह में रहते हुए भी ऐसा कह सकता हूँ कि 'मैं निरालंब हूँ', तब फिर वह मूल चेतन कैसा होगा!